विचार बिन्दु

सब इंद्रियों को वश में रखकर सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़-अचल और अचिन्त्य, सर्वव्यापी, स्वर्णीय, अविनाशी स्वरुप की उपासना करते हैं, वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं। –भगवान कृष्ण

राजस्थान में निजी अस्पतालों की मनमानी एवं सरकार द्वारा नियंत्रण

राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति पिछले एक दशक में जिस तेजी से बदली है, वह समाज के हर वर्ग को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही है। राज्य ने जहां एक ओर स्वास्थ्य योजनाओं का विस्तार किया है, वहीं निजी अस्पतालों की अनियंत्रित वृद्धि ने जनता की जेब और जीवन दोनों पर बोझ डाल दिया है। हालात ये हैं कि अब चिकित्सा सेवा कई जगह सेवा न रहकर, मुनाफ़े का माध्यम बन चुकी है। यह प्रवृत्ति समाज के संवेदनशील ढांचे पर सीधी चोट करती है।

राज्य के विभिन्न शहरों में फैले छोटे–बड़े निजी अस्पताल आकर्षक विज्ञापनों और अत्याधुनिक तकनीक के दम पर तेजी से आगे बढ़े हैं, लेकिन उनकी व्यावसायिक मानसिकता ने मरीजों को उपभोक्ता में बदल दिया है। इलाज की फीस, जांचों के शुल्क और दवाओं की कीमतें इस कदर बढ़ चुकी हैं कि मध्यमवर्गीय परिवार किसी गंभीर बीमारी का सामना करने से पहले ही आर्थिक संकट में फंस जाता है। कई बार अस्पताल प्रबंधन मामूली बीमारियों में भी भर्ती की सलाह देकर बिल बढ़ाने की कोशिश करते हैं। कुछ जगहों पर तो भर्ती मरीजों को कई गैर–जरूरी टेस्ट और महंगी दवाएं लिख दी जाती हैं, ताकि अंतिम बिल कई गुना बढ़ सके।

यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब किसी परिवार के सदस्य को अचानक आपातकालीन चिकित्सा की आवश्यकता पड़ जाती है। ऐसे समय में अस्पताल प्रवेश से पहले भारी एडवांस जमा करने की शर्त रख देते हैं, मानो मानवता नहीं, पैसों की दरकार पहली प्राथमिकता हो। निजी अस्पतालों में पारदर्शिता का अभाव इतना अधिक है कि मरीजों या परिजनों को यह तक नहीं बताया जाता कि कौन–सा उपचार कितना खर्चीला है और उसकी वैकल्पिक व्यवस्था क्या हो सकती है।

राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना जैसी योजनाओं के जरिये स्वास्थ्य सेवा को सुलभ और किफायती बनाने का प्रयास किया है। उद्देश्य था कि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को भी गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा मिले। इन योजनाओं में अस्पतालों को बीमा राशि के माध्यम से भुगतान का प्रावधान किया गया है, ताकि मरीज पर प्रत्यक्ष खर्च न पड़े। लेकिन निजी अस्पताल प्रायः इन योजनाओं को लागू करने में कारोबारी सोच से प्रेरित बाधाएं खड़ी करते हैं। कई मरीजों को बीमा कार्ड अस्वीकार की सूचना देकर निजी भुगतान करने को मजबूर किया जाता है। अस्पताल यह तर्क देते हैं कि सरकार की ओर से भुगतान देरी से होता है या निर्दिष्ट राशि अपर्याप्त है।

इस बहाने के पीछे निजी अस्पतालों की लालचपूर्ण मानसिकता छिपी रहती है, क्योंकि जब भुगतान नकद होता है, तो उन्हें अधिक लाभ मिलता है। यह रवैया सरकारी तंत्र की निगरानी क्षमता पर भी सवाल उठाता है। अगर सरकार योजना लागू कर रही है तो यह उसकी जिम्मेदारी है कि भुगतान व्यवस्था समयबद्ध और पारदर्शी रखे। दूसरी ओर अस्पतालों को भी यह समझना होगा कि जनकल्याणकारी योजना केवल सरकारी औपचारिकता नहीं, बल्कि सामाजिक नैतिकता का प्रतीक है।

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि राज्य स्तर पर एक पारदर्शी नियामक संस्था का गठन किया जाए जो विशेष रूप से निजी अस्पतालों की बिलिंग प्रणाली, सेवा गुणवत्ता, और शिकायत निवारण पर निगरानी रखे। विभिन्न रोगों और सर्जरी के लिए शुल्क सीमा तय की जाए, ताकि अस्पताल मनमाने ढंग से मूल्य न बढ़ा सकें। साथ ही, हर अस्पताल को अपने शुल्क और उपचार दरें सार्वजनिक पोर्टल पर प्रदर्शित करनी चाहिए।

राजस्थान में क्लिनिकल एस्टैब्लिशमेंट एक्ट जैसे नियम लागू हैं, परंतु उनका पालन अधिकांश निजी अस्पतालों में सतही रूप से होता है। निरीक्षण दलों की गतिविधियां अक्सर औपचारिक और सीमित होती हैं। कई बार राजनीतिक या आर्थिक प्रभाव के चलते ऐसे अस्पतालों के विरुद्ध कार्रवाई ठंडे बस्ते में डाल दी जाती है। नतीजतन, खास वर्ग का हित बाकी जनसमूह के अधिकारों पर भारी पड़ता है।

ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति और भी चिंताजनक है। कई छोटे कस्बों में नर्सिंग होम या क्लिनिक के नाम पर ऐसे प्रतिष्ठान चल रहे हैं जिनके पास न तो योग्य चिकित्सक हैं, न पर्याप्त संसाधन। गर्भवती महिलाओं की डिलीवरी, छोटी सर्जरी या इनडोर इलाज जैसे कार्य अर्धप्रशिक्षित लोगों द्वारा किए जा रहे हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधी जोखिम और मौतों के मामले बढ़ रहे हैं। सरकार के स्वास्थ्य निरीक्षकों की पहुँच वहाँ या तो बहुत सीमित है या फिर स्थानीय प्रभावशाली लोगों के दबाव में निष्क्रिय बनी रहती है।

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि राज्य स्तर पर एक पारदर्शी नियामक संस्था का गठन किया जाए जो विशेष रूप से निजी अस्पतालों की बिलिंग प्रणाली, सेवा गुणवत्ता, और शिकायत निवारण पर निगरानी रखे। विभिन्न रोगों और सर्जरी के लिए शुल्क सीमा तय की जाए, ताकि अस्पताल मनमाने ढंग से मूल्य न बढ़ा सकें। साथ ही, हर अस्पताल को अपने शुल्क और उपचार दरें सार्वजनिक पोर्टल पर प्रदर्शित करनी चाहिए।

राज्य सरकार को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हेल्थ इंश्योरेंस क्लेम की प्रक्रिया पूरी तरह डिजिटल और स्वचालित हो जाए, ताकि भुगतान में विलंब का बहाना समाप्त हो। रोगियों के अधिकारों को लेकर भी जनजागरूकता जरूरी है। यदि जनता को यह जानकारी नहीं होगी कि उसे किस सेवा पर कितना खर्च देना चाहिए, तो शोषण की संभावनाएं बनी रहेंगी।

यह सही है कि निजी अस्पतालों ने आधुनिक तकनीक और विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं को राजस्थान में नई ऊँचाई दी है। हृदय रोग, न्यूरो सर्जरी, कैंसर उपचार और अंग प्रत्यारोपण जैसे क्षेत्रों में निजी क्षेत्र का योगदान श्रेष्ठ है। लेकिन जब यही स्वास्थ्य सेवा केवल आर्थिक दृष्टि से चलने लगती है, तब उसका मूल उद्देश्य विकृत हो जाता है। चिकित्सा का मूल भाव 'सेवा' है, न कि 'व्यापार'।

सरकार को चाहिए कि वह नियमन को सख्त करते हुए ईमानदार अस्पतालों का संरक्षण भी करे। ऐसी व्यवस्था बनाई जा सकती है जिसमें नीति आधारित लाभ उन संस्थानों को मिले जो समाजिक जिम्मेदारी निभाते हैं, जैसे गरीब मरीजों के लिए निशुल्क वार्ड चलाना या ग्रामीण स्वास्थ्य शिविरों में भागीदारी करना। इस प्रकार प्रतिस्पर्धा केवल लाभ में नहीं, बल्कि मानवीय सेवा में भी हो।

राज्य की स्वास्थ्य नीति को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, मानवता के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। अगर डॉक्टरों और अस्पताल संचालकों के मन में यह भावना स्थापित हो जाए कि प्रत्येक मरीज एक जीवन की संभावना है, न कि केवल ठााहक, तो यह समाज पुनः सेवा के उस मूल्य को पा सकता है जो हमारे जीवन दर्शन का मूल रहा है।

अंततः यह समझना होगा कि रोगी की व्यथा केवल शरीर की बीमारी तक सीमित नहीं होती। जब उसे अस्पताल से संवेदनशीलता, ईमानदारी और पारदर्शिता मिलती है, तभी वह उपचार को विश्वास में बदलता है। यही विश्वास किसी भी समाज में स्वास्थ्य सेवा की वास्तविक पूंजी है। राजस्थान जैसे संवेदनशील और जनकल्याणकारी राज्य को यह सुनिश्चित करना होगा कि यह पूंजी सुरक्षित रहे।

स्वास्थ्य का अधिकार केवल नारा नहीं होना चाहिए, यह एक सामाजिक अनुशासन बने। जब सरकार, अस्पताल और नागरिक तीनों इसकी जिम्मेदारी समान रूप से निभाएँगे, तब ही राज्य का स्वास्थ्य तंत्र जनहित में सशक्त और संतुलित बन सकेगा। यही वह दिशा है जो राजस्थान को इक्कीसवीं सदी के संवेदनशील, सशक्त और स्वास्थ्य–समृद्ध समाज की ओर ले जाएगी।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

ट्रंप टैरिफ का भारत पर असर: आशंकाएं, हकीकत और सबक

राम शर्मा

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ नीति ने वैश्विक व्यापार व्यवस्था में गहरी हलचल पैदा की थी। अमेरिका फर्स्ट के नारे के तहत ट्रंप प्रशासन ने कई देशों से होने वाले आयात पर अतिरिक्त शुल्क लगाए, जिनमें भारत भी शामिल था। उस समय यह आशंका जताई गई थी कि इन टैरिफों से भारत के निर्यात को बड़ा झटका लगेगा और भारतीय उद्योग, विशेषकर निर्यात–आधारित क्षेत्र, गंभीर संकट में आ जाएंगे। लेकिन हाल ही में आई एक रिपोर्ट ने इस धारणा को काफी हद तक चुनौती दी है और कहा है कि ट्रंप टैरिफ का भारत के कुल निर्यात पर अपेक्षा से कहीं कम असर पड़ा। ट्रंप प्रशासन का तर्क यह था कि भारत अमेरिकी उत्पादों पर अपेक्षाकृत अधिक आयात शुल्क लगाता है, जबकि अमेरिका भारतीय उत्पादों को कम टैरिफ पर प्रवेश देता रहा है। इसी कथित असंतुलन को दूर करने के नाम पर भारत से आने वाले कुछ उत्पादों पर अतिरिक्त टैरिफ लगाए गए। इन उपायों का उद्देश्य अमेरिकी घरेलू उद्योगों को संरक्षण देना और व्यापार घाटा कम करना था। भारत के संदर्भ में यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण माना गया क्योंकि अमेरिका भारत का एक प्रमुख निर्यात बाजार है।

शुरुआती दौर में इन टैरिफों को लेकर भारत में चिंता का माहौल था। आशंका जताई जा रही थी कि वस्त्र, रत्न–आभूषण, इंजीनियरिंग उत्पाद, रसायन, समुद्री उत्पाद और कुछ कृषि वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। कई निर्यातक संगठनों ने चेतावनी दी थी कि यदि टैरिफ लंबे समय तक लागू रहे, तो इससे रोजगार, निवेश और औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हो सकता है। हालांकि समय के साथ जो तस्वीर सामने आई, वह इन आशंकाओं से काफी अलग निकली।

हाल ही में प्रकाशित पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ का भारत के निर्यात और अर्थव्यवस्था पर समग्र रूप से बहुत अधिक नकारात्मक असर नहीं पड़ा है। रिपोर्ट के अनुसार, जिन उत्पादों पर अतिरिक्त टैरिफ लगाए गए, उनका कुल मूल्य भारत के समग्र निर्यात का एक छोटा हिस्सा है। अनुमान के मुताबिक, टैरिफ से प्रभावित निर्यात भारत के कुल निर्यात का दो प्रतिशत से भी कम बैठता है, जबकि सकल घरेलू उत्पाद पर इसका प्रभाव लगभग 0.2 प्रतिशत तक ही सीमित रहता है।

रिपोर्ट यह भी रेखांकित करती है कि टैरिफ के बावजूद अमेरिका को भारत का निर्यात पूरी तरह बाधित नहीं हुआ। कुछ महीनों में जरूर उतार–चढ़ाव देखने को मिला, लेकिन कुल मिलाकर भारतीय निर्यातकों ने परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाल लिया। कई कंपनियों ने लागत में कटौती, आपूर्ति श्रृंखला में सुधार और उत्पाद गुणवत्ता बढ़ाने जैसे उपाय अपनाए, जिससे वे अमेरिकी बाजार में अपनी मौजूदगी बनाए रखने में सफल रहीं। कुछ मामलों में तो ऊंचे टैरिफ के बावजूद भारतीय उत्पादों की मांग बनी रही, क्योंकि उनकी कीमत और गुणवत्ता प्रतिस्पर्धी थी।

सरकारी आंकड़े भी इसी रुझान की पुष्टि करते हैं। सरकार ने संसदीय समितियों और अन्य मंचों पर यह स्पष्ट किया है कि अमेरिकी टैरिफ के बावजूद भारत के कुल निर्यात में कोई बड़ी गिरावट दर्ज नहीं की गई। कुछ अवधियों में अमेरिका को भारत के निर्यात में वृद्धि भी देखने को मिली, जो यह दर्शाता है कि टैरिफ का असर सीमित और असमान रहा। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की निर्यात संरचना में विविधता और घरेलू बाजार की मजबूती ने इस झटके को सहने में मदद की।

हालांकि यह कहना भी जरूरी है कि सभी क्षेत्रों पर टैरिफ का प्रभाव एक जैसा नहीं रहा। श्रम–प्रधान उद्योगों, जैसे वस्त्र, चमड़ा और रत्न–आभूषण क्षेत्र में दबाव महसूस किया गया। इन क्षेत्रों में मुनाफा घटा और कुछ निर्यात ऑर्डर प्रभावित हुए। छोटे और मझोले निर्यातकों के लिए स्थिति अपेक्षाकृत कठिन रही, क्योंकि उनके पास लागत बढ़ने की भरपाई करने के सीमित साधन थे। इसके बावजूद यह असर इतना व्यापक नहीं था कि भारत की समग्र आर्थिक दिशा को बदल सके।

इसका एक बड़ा कारण यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से घरेलू मांग पर आधारित है। निर्यात का योगदान जीडीपी में अपेक्षाकृत सीमित है, जबकि सेवा क्षेत्र, उपभोग और आंतरिक निवेश अर्थव्यवस्था की रीढ़ बने हुए हैं। यही वजह है कि अमेरिका जैसे बड़े बाजार में टैरिफ बढ़ने के बावजूद भारत की आर्थिक वृद्धि पर इसका प्रभाव सीमित रहा।

ट्रंप टैरिफ ने भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सबक भी छोड़ा है। यह स्पष्ट हो गया कि किसी एक बड़े बाजार पर अत्यधिक निर्भरता जोखिम पैदा कर सकती है। इसी सोच के तहत भारत ने हाल के वर्षों में निर्यात बाजारों के विविधीकरण पर जोर दिया है। यूरोप, मध्य–पूर्व, अफ्रीका और एशियाई देशों के साथ व्यापार बढ़ाने की कोशिशें तेज हुई हैं। मुक्त व्यापार समझौतों और क्षेत्रीय साझेदारियों के माध्यम से भारत अपने निर्यातकों के लिए नए अवसर तलाश रहा है।

कुल मिलाकर, हालिया रिपोर्ट और उपलब्ध आंकड़े यह संकेत देते हैं कि ट्रंप टैरिफ को लेकर जो आशंकाएँ व्यक्त की जा रही थीं, वे पूरी तरह सही साबित नहीं हुईं। भारत के निर्यात पर इसका असर सीमित रहा और अर्थव्यवस्था ने इसे अपेक्षाकृत सहजता से झेल लिया। यह भारत की आर्थिक संरचना, नीति–संतुलन और अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है। भविष्य में यदि वैश्विक व्यापार में ऐसे संरक्षणवादी कदम उठाए जाते हैं, तो भारत के पास उनसे निपटने का अनुभव और क्षमता दोनों मौजूद हैं।

–राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

शिल्पग्राम उत्सव : बंगाल के राय बेंसे लोक नृत्य का छाया जादू

मंच पर राजस्थान के सहरिया आदिवासी संस्कृति के सहरिया स्वांग डांस व सफेद आंगी गेर ने दर्शकों का मन मोह लिया।

सिर पर दीपक (समई) रख नऊवारी साड़ी पहनी नर्तकियों ने गोवा का प्रसिद्ध समई नृत्य किया।

उदयपुर, (कासं)। शिल्पग्राम उत्सव–2025 के तहत खचाखच भरे मुक्ताकाशी मंच पर दर्शकों में उस वक्त नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हो गया, जब पश्चिम बंगाल के राय बेंसे लोक नृत्य में नर्तकों ने शानदार एक्रोबेटिक युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया। राय बेंसे पश्चिम बंगाल का एक पारंपरिक लोक नृत्य है, जो मुख्य रूप से बीरभूम, बर्धमान और मुर्शिदाबाद जिलों में किया जाता है। इसमें नर्तकों ने शौर्य और युद्ध कला का प्रदर्शन कर दर्शकों को खूब रोमांचित किया।

यह नृत्य शैली केवल पुरुषों द्वारा प्रस्तुत की जाती है। इसमें जोश, ताकत और तालमेल का खूबसूरत प्रदर्शन दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर गया। यह प्रस्तुति शुक्रवार शाम उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर की ओर से आयोजित किए जा रहे दस दिवसीय शिल्पग्राम उत्सव में दी गई। इसके साथ ही बंगाल के ही नटुआ नृत्य में मार्शल आर्ट की नृत्य शैली में प्रस्तुती देख दर्शक वाह–वाह कर उठे।

इसके साथ ही उत्तर प्रदेश के प्रयागराज क्षेत्र के पारंपरिक ढेड़िया लोक नृत्य ने भी दर्शकों का दिल जीत लिया। इसमें नर्तकियों ने सिर पर मिट्टी का घड़ा (दीया रखकर) संतुलन का बेहतरीन प्रदर्शन किया तो शिल्पग्राम दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इसमें गीत और नृत्य के तालबद्ध सामंजस्य ने तमाम सामयीन के दिलों को झंकृत कर यूपी की लोक संस्कृति से दर्शकों को रू–ब–रू कराया। इस शाम की हर प्रस्तुति ने उत्सव की 'लोक के रंग–लोक के संग' थीम पर खरी उतरते हुए सुधी दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। इनमें जम्मू के पारंपरिक डोगरी लोक नृत्य जगरना के साथ ही राजस्थान के सहरिया आदिवासी संस्कृति के

■ **राय बेंसे में नर्तकों ने शौर्य और युद्ध कला का प्रदर्शन कर दर्शकों को रोमांचित किया**

सहरिया स्वांग डांस व सफेद आंगी गेर ने भी सभी का मन मोह लिया। उत्तराखंड के मीठी छेड़छाड़ वाले छापेली लोक नृत्य को दर्शकों ने खूब सराहा, तो सिर पर दीपक (समई) रख नऊवारी साड़ी पहनी नर्तकियों ने जब गोवा का प्रसिद्ध समई नृत्य किया तो बैलेंसिंग, हाव–भाव व लयबद्धता सामयीन को खूब पसंद आई। वहीं, त्रिपुरा के सिर पर बोतल रख बेमिसाल बैलेंसिंग के लोक नृत्य होजागिरी देख अभिभूत हुए दर्शकों ने खूब दाद दी। इनके साथ ही महाराष्ट्र के मल्लखंभ और मणिपुर की मार्शल आर्ट से लबरेज फोक प्रस्तुति थांग–ता ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। वहीं, छत्तीसगढ़ के पंडवानी ज्ञान (पांडवों की कथा) ने आध्यात्म के साथ जोश का संचार किया। कार्यक्रम का संचालन मोहिता दीक्षित और यश दीक्षित ने किया।

शिल्पग्राम उत्सव में बंजारा मंच पर चल रहे 'हिवड़ा री हूक' कार्यक्रम के छठे दिन शुक्रवार को भी मेलार्थियों ने खुद गाने, कविता आदि पेश कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए खब एंजॉय किया। वहीं को–ऑर्डिनेटर सौरभ भट्ट की प्रश्नोत्तरी ने कार्यक्रम को और रोचक बना दिया। क्विज में सही उत्तर देने वालों को हाथों–हाथ उपहार भी दिए जा रहे हैं।

शिल्पग्राम में विभिन्न थड़ों पर सुबह 11 बजे से शाम 6 बजे तक अलग–अलग प्रस्तुतियां मेलार्थियों का भरपूर मनोरंजन कर रही हैं। इनमें शुक्रवार को मुख्य द्वार आंगन पर आदिवासी गेर व घूघरा–छतरी (मीणा ट्राइब), आंगन के पास बाजीगर, देवरा पर तेरहताली व भवई, बन्नी पर कुच्छी ज्ञान, सम पर नाद, भूजोड़ी पर बीन जोगी, पिथौरा पर गलालेंग (लोक कथा), पिथौरा चबूतर पर चकरी, बड़ा बाजार पर मांगणियार, बड़ा बाजार (नुक्कड़ पर) पावरी (महाराष्ट्र–गुजरात का कोकणा जनजाति का नाच), गोवा ग्रामीण पर कठपुतली, दर्पण द्वार पर सुंदरी, दर्पण चौक पर सुंदरी की प्रस्तुतियों को देख दर्शकों ने खूब सराहा। वहीं, शिल्पग्राम प्रांगण में विभिन्न स्थानों पर घूमते हुए बहरूपिया मेलार्थियों रिझा रहे हैं। इसके अलावा प्रांगण में कई जगह स्थापित पत्थर के स्कल्पचर्स, खूबसूरत झोंपड़ों सहित कई स्थान मेलार्थियों के फेवरिट सेल्फी पॉइंट्स बन चुके हैं।

रेल खंडों में ट्रैक नवीनीकरण कार्य को स्वीकृति मिली

जोधपुर, (कासं)। भारतीय रेल ने देश की रेल अवसंरचना को आधुनिक बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसके तहत उत्तर पश्चिम रेलवे के अंतर्गत राई का बाग–फलोदी–जैसलमेर तथा लालगढ़–कोलायत–फलोदी रेल खंडों में व्यापक ट्रैक नवीनीकरण कार्य को स्वीकृति प्रदान की गई है। यह परियोजना 850 करोड़ की लागत से क्रियान्वित की जाएगी।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार यह प्रस्ताव दो रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण रेल खंडों की ट्रैक संरचना को आधुनिक और मजबूत बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया था। इन खंडों पर वर्तमान में पुरानी रेल पटरियां और स्लीपर उपयोग में हैं, जिनका नवीनीकरण सुरक्षा, परिचालन क्षमता और दीर्घकालिक रखरखाव की दृष्टि से आवश्यक माना जा रहा है। परियोजना के तहत पहला खंड राई का बाग–फलोदी–जैसलमेर है, जिसकी कुल लंबाई 291.126 किलोमीटर है। इस मार्ग पर वर्तमान में

■ **उत्तर पश्चिम रेलवे के अंतर्गत राई का बाग-फलोदी-जैसलमेर तथा लालगढ़-कोलायत-फलोदी रेल खंडों में व्यापक ट्रैक नवीनीकरण कार्य को स्वीकृति प्रदान की गई है, यह परियोजना 850 करोड़ की लागत से क्रियान्वित की जाएगी**

स्थापित रेल पटरियों का रोलिंग मार्क वर्ष 2005 का है, जिन्हें 2006 में बिछाया गया था। लंबे समय से परिचालन में रहे इस ट्रैक के नवीनीकरण को रेलवे प्रशासन ने तकनीकी आवश्यकता के रूप में चिन्हित किया था, जिसके बाद विस्तृत सर्वेक्षण और आंकलन के आधार पर यह प्रस्ताव तैयार किया गया। दूसरा खंड लालगढ़–कोलायत–फलोदी है, जिसकी लंबाई 73.742 किलोमीटर है। इस खंड में उपयोग में लाई जा रही रेल पटरियों का रोलिंग मार्क 2004 से 2006 के बीच का है और इन्हें 2006–07 के दौरान बिछाया गया था। अधिकारियों के अनुसार दोनों ही खंडों पर ट्रैक संरचना की वर्तमान स्थिति को देखते हुए नवीनीकरण कार्य को प्राथमिकता सूची में शामिल किया गया था। इससे पहले वित्त विभाग ने इस परियोजना के लिए प्रति किलोमीटर 2.84 करोड़ की लागत को स्वीकृति प्रदान कर दी थी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 27 दिसम्बर, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र प्रातः 9:10 तक, व्यतिपात योग दिन 12:21 तक, वणिज करण दिन 1:10 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–धनु, चन्द्रमा–मीन, मंगल–धनु, बुध–वृश्चिक, गुरू–मिथुन, शुक्र–धनु, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन 9:10 तक है। आज भद्रा दिन 1:10 से रात्रि 12:35 तक रहेगी। आज गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती, पंचक, व्यतिपात पुण्य है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 8:36 से 9:53 तक, चर 12:28 से 1:45 तक, लाभ–अमृत 1:45 से 4:20 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 5:37

मेष
घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। समय अनावश्यक खर्च होगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कन्या
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

धनु
घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

मकर
घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

कुंभ
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।